



Original Article

‘रेहन पर रघू’ उपन्यास में चित्रित पारिवारिक समस्याएं

प्रा. भक्ती शंकर भालदारे

सहायक प्राध्यापक एवं हिंदी विभाग प्रमुख

महिला महाविद्यालय, कराड

Manuscript ID:

IJAAR-C130342

ISSN: 2347-7075

Impact Factor – 8.141

Volume – 13

Issue – 3

January – February 2026

Pp. 208 – 211

Submitted: 28 Jan.2026

Revised: 06 Feb. 2026

Accepted: 10 Feb. 2026

Published: 28 Feb. 2026

Corresponding Author:

प्रा. भक्ती शंकर भालदारे

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI: 10.5281/zenodo.22786080

DOI Link:

<https://doi.org/10.5281/zenodo.22786080>



Creative Commons



सार:

काशीनाथ सिंह के ‘रेहन पर रघू’ उपन्यास में पारिवारिक समस्याओं का चित्रण हुआ है। भूमंडलीकरण के इस दौर में मानवीय जीवन मूल्यों का बिखराव, पारिवारिक जीवन में टकराहट आदि हमें देखने को मिलता है। इस भूमंडलीकरण के आंधी ने हमारे पारिवारिक मूल्यों को तहस - नहस करके उनको हासिए पर बिठा दिया है। नैतिक मूल्यों का पतन, आपसी रिश्तों में टकराहट, विचारों में मतभिन्नता, संयुक्त परिवार का विघटन, धन-लोलुपता के कारण रिश्तों में दरारें, अकेलापन, वैवाहिक समस्याएं, नई-पुरानी पीढ़ी की वैचारिक मतभिन्नता, बड़ों का अनादर जैसे पारिवारिक समस्याओं के कारण हमारे घर - परिवार होते हुए भी हमारी अवस्था आंधी में घिरे हुए उस वृक्ष की तरह हुई है जिसकी जड़े अब ढीली होने लगी है। नई पीढ़ी शॉर्टकट का मार्ग अपना कर ऊंचाई को छूना चाहती है इसके लिए वह नैतिकता, रिश्तों-नातों का कत्ल करने के लिए भी तैयार है। इन्हीं पारिवारिक समस्याओं का अवलोकन करते हुए काशीनाथ सिंह ने ‘रेहन पर रघू’ उपन्यास की रचना की।

मुख्य शब्द: भूमंडलीकरण, माननीय संबंध, पारिवारिक रिश्ते – नाते, नई - पुरानी पीढ़ी का वैचारिक द्वंद्व।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

How to cite this article:

प्रा. भक्ती शंकर भालदारे. (2026). ‘रेहन पर रघू’ उपन्यास में चित्रित पारिवारिक समस्याएं. *International Journal of Advance and Applied Research*, 13(3), 208 - 211. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22786080>

प्रस्तावना:

साठोत्तरी लेखन में काशीनाथ सिंह का नाम प्रसिद्ध है। ‘रेहन पर रघू’ इस उपन्यास की रचना आपने सन 2008 में की जिसे साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया है। इस उपन्यास के बारे में स्वयं काशीनाथ सिंह कहते हैं ‘काशी का

अस्सी’ मेरा नगर था तो ‘रेहन पर रघू’ मेरा घर है। इस उपन्यास में काशीनाथ सिंह ने भूमंडलीकरण और उपभोक्तावादी संस्कृति के दौर में भारतीय समाज और पारिवारिक परिवर्तन का यथार्थ चित्रण किया है। भूमंडलीकरण के इस दौर में रिश्ते बदले हैं,



इंसान बदल है, पारिवारिक, नैतिक, मूल्यों में परिवर्तन हुआ है और यह समाज के सामने समस्या बनकर उभर कर आई है।

शोध विषय का विश्लेषण:

समाज की प्रमुख कड़ी के रूप में परिवार है। परिवार किसे कहें इसके संदर्भ में विद्वानों में मतभेद हैं परिवार के संदर्भ में सर्वश्री वर्नेश एवं लाक ने लिखा है – “ परिवार विवाह रक्त संबंध या गोद लेने के बंधनों से संबद्ध व्यक्तियों का एक समूह है जो गृहस्थी का निर्माण करते हैं और एक - दूसरे के साथ अंतः क्रिया और अंतः संदेश देते हुए पति -पत्नी, माता-पिता, पुत्र-पुत्री और भाई- बहन के रूप में निर्धारित सामाजिक कार्यों का वहन करते हैं एक सामान्य संस्कृत को बनाते हैं एवं उसकी रक्षा करते हैं।”¹ इस प्रकार समाज का विकास परिवार के विकास पर आधारित रहता है। यदि परिवार में ही नैतिक मूल्यों का पतन, आपसी रिश्तों में टकराहट, विचारों में मतभिन्नता, धनलोलुपता आदि समस्याएं होगी तो उस समाज का विकास कैसे होगा ? यह प्रश्न उपस्थित होता है। भूमंडलीकरण के इस दौर में मनुष्य न चाहते हुए भी इस आंधी में ही कहीं गुम हो रहा है। ना चाहते हुए उसे हम स्वीकार कर रहे हैं, इसी की ओर निर्देश करते हुए काशीनाथ सिंह ने ‘रेहन पर रघू’ इस उपन्यास की रचना की।

उपन्यास का प्रारंभ फैश बैक शैली में हुआ है। उपन्यास का प्रमुख पात्र बुजुर्ग रघुनाथ अशोक विहार में अकेला है। संजय और धनंजय (राजू) दो पुत्र और सरला नाम की एक पुत्री होते हुए भी वह आज अकेले हैं। रघुनाथ ग्रामीण परिवेश से उनकी नाल जुड़ी हैं। पर परिवार में आई हुई आंधी ने उन्हें अकेला कर दिया है रघुनाथ अपनी पत्नी शीला को कहते हैं – “हमारे तीन बच्चे हैं लेकिन पता नहीं क्यों, कभी-कभी मेरे भीतर ऐसी हूक उठती है जैसे लगता है - मेरी औरत बाँझ है,

और मैं निःसंतान पिता हूँ। माँ और पिता होने का सुख नहीं जाना हमने ! हमने न बेटे की शादी देखी, न बेटी की ! न बहू देखी, न होने वाला दामाद देखा। हम ऐसे अभागे मां-बाप हैं।”² इस कथन से स्पष्ट होता है कि वृद्धावस्था में दोनों पति-पत्नी अकेले पड़ चुके हैं। बड़े बेटे संजय ने अपनी मर्जी से शादी की है और का में अमेरिका में जाकर बस जाता है। छोटा लड़का राजू शॉर्टकट अपना कर जीवन में धनवान बनना चाहता है और अपने से चार साल बड़ी एक बच्चे की मां के साथ ‘लिव इन’ में रहता है। लड़की सरला भी अपनी जाति से निचली जाति के युवक से शादी करना चाहती है, पर मां-बाप के इनकार पर अविवाहित रहना पसंद करती है। इस प्रकार रघुनाथ का पूरा परिवार टूट जाता है और परिवार का प्रत्येक सदस्य अपना अलग-अलग जीवन जीने लगते हैं। अंत में पत्नी भी बेटी के पास चली जाती है और रघुनाथ अकेलेपन का शिकार हो जाते हैं।

बाजारवादी इस युग में मानवता, निस्वार्थता कहीं दिखाई नहीं दे रही है। हर व्यक्ति अपने काम से लाभ लेना चाहता है। निस्वार्थ रूप में न कोई किसी को मदद करता है और न ही प्रेम। आज स्वार्थपरकता व्यक्ति के जीवन का प्रमुख अंग बन गई है। इस संदर्भ में समाजशास्त्री हरिकृष्ण रावत लिखते हैं – “प्रत्येक वस्तुस्थिति को वैयक्तिक दृष्टिकोण से देखने, समझने तथा अपने आप में केंद्रित रखने की प्रवृत्ति स्वार्थ परकता कहलाती है।”³ इस प्रकार की स्वार्थपरक प्रवृत्ति के कारण ही रिश्तों में ‘प्रेम’ की जगह ‘जरूरत’ ने ली है। भूमंडलीकरण के इस दौर में रिश्ते भावनाओं के आधार पर मजबूत नहीं होते बल्कि लेन- देन का व्यापार महत्वपूर्ण हो गया है। रघुनाथ का बड़ा बेटा संजय सोनल के साथ विवाह करके



अमेरिका जा पाता है, पर वहां जाकर उसे सोनम को पत्नी का दर्जा नहीं देता वह और अधिक ऊंचाई पर पहुंचाना चाहता है। इसी कारण आरती गुर्जर के साथ रिश्ता बनता है। आरती गुर्जर बड़े व्यवसायिक की इकलौती संतान है। सोनम जब भी संजय को उसकी हरकतों की शिकायत करती तो वह खीझ उठता, वह उसे कहता -“ तुम देश और काल के हिसाब से अपने को बदलना सीखो, चलना सीखो। चल सको तो चुपचाप बैठो या लौट जाओ।” एक बार तो वह सोनम को मुस्कराते हुए कहता है- “तुम भी क्यों नहीं ढूंढ लेती एक बॉयफ्रेंड!”⁴ अतः उपभोक्तावादी युग में रिश्तो की कदर कम होती दिखाई देती है और उसकी जगह ‘जरूरत’ और ‘धन’ ने ली है। कोई भी रिश्ता भावनाओं पर आधारित नहीं रहा।

वर्तमान समय में हम देख रहे हैं कि संयुक्त परिवार में बिखराव आ गया है। इसका कारण संपत्ति के लिए हो रहे कलह। उपन्यास में रघुनाथ का भतीजा नरेश गुंडई करते हुए अपने चाचा रघुनाथ की जमीन हड़पना चाहता है। जब रघुनाथ इसका विरोध करते हैं तो नरेश का छोटा भाई देवेश धक्का मार कर रघुनाथ को गिरा देता है और उनकी छाती पर बैठकर चिकता है -“साले बुड्ढे! टेंटुआ पड़कर अभी चाँप दे तो टे बोले जाओगे ! हम जितनी भी शराफत से बात कर रहे हैं, उतना ही शेर बन रहे हो! जा जो करना है, कर ले ! उठाते हुए उसने उनकी कमर पर ऐंड जमाई – साला बुड्ढा हरामजादा !”⁵ इस प्रकार संयुक्त परिवार संपत्ति हवस के कारण विभक्त होते हुए दिख रहे हैं। इसका शिकार रघुनाथ जैसे नैतिक मूल्यों का पालन करने वाले हो रहे हैं। आज घर-घर की यही स्थिति दिखाई देती है। अपनों से दूर गए रघुनाथ का अब समाज के अपनों पर भी भरोसा नहीं रहा है। इसी कटु सच्चाई को रघुनाथ

उपन्यास के पात्र जगन से कहते हैं- “देखो जगन, परायों में ‘अपने’ मिल जाते हैं लेकिन ‘अपनों’ में अपने नहीं मिलते। ऐसा नहीं कि अपने नहीं थे -थे लेकिन तब जब समाज था, परिवार थे, रिश्ते नाते थे, जब भावना थी।”⁶ इस प्रकार समाज में संयुक्त परिवारों का महत्व बताकर वर्तमान युग में पारिवारिक विघटन की वास्तविकता का पर्दाफाश काशीनाथ सिंह ने रघुनाथ के द्वारा किया है और पाठकों को इस पर सोचने के लिए मजबूर किया है। यह केवल अकेले रघुनाथ की कथा नहीं है बल्कि समाज के घर-घर की कथा है।

नई पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी का वैचारिक द्वंद्व भी परिवार टूटने का एक प्रमुख कारण बनता जा रहा है। रघुनाथ का छोटा बेटा डोनेशन के द्वारा नोएडा में एडमिशन लेना चाहता है और अपने आयशो - आराम की जिंदगी जीने के लिए बिना विवाह एक बच्चे की मां के साथ ‘लिव इन’ में रहता है। दोनों अपनी अपनी जरूरतें पूरा करते हैं। इसी बात को लेकर रघुनाथ और राजू के विचारों में मतभेद है। तो दूसरी और जब भतीजा नरेश के द्वारा जमीन को लेकर जब गुंडे हुई तब शीला के कहने पर रघुनाथ अपने बेटों की सलाह लेना चाहता है। राजू फोन पर रघुनाथ को कहता है-“ क्यों मारे जा रहे हैं जमीन को लेकर ? छोड़िए उसे और सुनिए भाभी बनारस में आ गई है अशोकनगर में। ज्वाइन कर लिया है यूनिवर्सिटी में। आप मां को लेकर चले जाइए और वही रहिए।”⁷

इस प्रकार नई पीढ़ी को अपने विरासत में प्राप्त हुई जमीन के प्रति कोई लगाव दिखाई नहीं देता राजू उस पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करता है जो अपने पूरखों की जमीन का कोई महत्व नहीं रखते। दूसरी तरफ वह पुरानी पीढ़ी है जो जमीन को अपनी मां समझती है। रघुनाथ भी अपनी धरती मां की एहीमत



को समझता है। इसी कारण जब राजू जमीन बिकने की बात करता है तो उन्हें बहुत क्रोध आता है। वे शिला को कहते हैं – “मैं तीस-पैंतीस साल नौकरी की, लाखों कमाए और आज हाथ में एक पैसा नहीं ! इस हाथ आए, उसे हाथ गए। पूछो कि कहाँ गए तो नहीं बता सकता और यह जमीन? आज भी जहाँ की तहाँ है ! रत्ती भर भी टस से मस नहीं हुई अपनी जगह से ! इसने तुम्हारे आजां को खिलाया, दादा परदादा को खिलाया, बाप को खिलाया, तुम्हें खिलाया, यही नहीं, तुम्हारे बेटू और नाती पोतों को भी खिलाएगी ! तुम करोड़ों कमाओगे लेकिन रुपया और डॉलर नहीं खाओगे। भगवान ना करें कि वह दिन आए जब बैंक चावल दाल के दाने बाँटे।”⁸ इस प्रकार इस कथन के द्वारा काशीनाथ सिंह ने भूमंडलीकरण के इस दौर में दो पीढ़ियाँ के बीच में किस प्रकार के वैचारिक द्वंद्व है यह बताने का और हमें सचेत करने का सफल प्रयास किया है कि धन हमारे पेट की भूख पूर्ण नहीं कर सकता उसके लिए हमें हमारी धरती माँ के प्रति एकनिष्ठता रखनी होगी उसकी पूजा करनी होगी।

निष्कर्ष:

वर्तमान समय के भूमंडलीकरण के दौर में बदलते परिवेश के बीच पारिवारिक - मानवीय संबंध टूटकर बिखरने की गाथा ‘रेहन पर रघू’ उपन्यास का केंद्रीय विषय है। इस उपन्यास में संयुक्त परिवार का विघटन, धन-लोलुपता के कारण रिश्ते में दरारें, अकेलापन, वैवाहिक समस्याएं, नई- पुरानी पीढ़ी की वैचारिक मत भिन्नता, बड़ों का अनादर आदि समस्याओं का यथार्थ चित्रण काशीनाथ सिंह ने किया है। आने वाली पीढ़ी इसी का अनुकरण करते रहेंगी तो नैतिकता का पतन तो होगा ही , परिणामस्वरूप पारिवारिक संस्था नष्ट होगी ही और बाजारवाद की जीत होगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. डॉ.शशिप्रभा वर्मा - महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में बदलते सामाजिक संदर्भ, विद्या विहार कानपुर प्रकाशन, पृष्ठ क्र. 104
2. हरिकृष्ण रावत - समाजशास्त्र कोष, अवधारणाएं खंड प्रथम-पृष्ठ क्र. 43
3. काशीनाथ सिंह - रेहन पर रघू, राजकमल प्रकाशन पहला संस्करण 2008, चौथी आवृत्ति, पृष्ठ क्र.89
4. काशीनाथ सिंह - रेहन पर रघू, पृष्ठ क्र.110
5. वही, पृष्ठ क्र. 80-81
6. वही, पृष्ठ क्र. 98
7. वही, पृष्ठ क्र. 84
8. वही, पृष्ठ क्र. 85
9. कामेश्वर प्रसाद सिंह -चौपाल में रेहन पर रघू, अरु प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2014